FORWARD

Indian civilization and culture has evolved over ages. It has many regional contours with sharp demarcations and distinctions. All the regions have unique geography, food, customs, literature, philosophy, classical arts and languages. Haryana, though a small state has emerged as one of the most powerful and developed state due to its cultural inspirations. Its rich culture has taught people to live, work and enjoy. People eat nutritious food, work hard and love to entertain themselves with folk music, folk dance, saang (folk theatre),folk lores etc. With the breaking of universal boundaries due to the advancement of technology and science, the youth is more and more hooked to western culture. Thus to revisit our healthy music culture a seminar devoted to Haryanvi folk music was organized by Dr Paramjeet Kaur Assistant professor Dept. of music instrumental in our college. With urbanization there has been an increasing trend of adopting foreign cultural values while keeping our own culture at stake. There is a need to educate the youth about our culture. To engage the youth the college participates largely in youth festivals depicting Haryanvi cultural items. Further work has been planned to educate and expose students to our cultural and folk traditions by organizing workshops. Dr Paramjeet Kaur has taken the onus of publishing the proceedings of the seminar that depicts different facets of Haryanvi folk music presented through scholars and musicians in the seminar. I thank Haryana Granth Academy Panchkula also for funding the seminar so that it could become a successful attempt to rejuvenate our culture among Haryana's youth.

Dr. Rajinder Singh
Principal

आमुख

– डॉ. परमजीत कौर
विभागाध्यक्ष (संगीत)
सनातन धर्म कॉलेज
अम्बाला छावनी।

भारत के विभिन्न प्रान्त अपनी भाषा, संस्कृति, मिथकों, प्रतीकों तथा मान्यताओं के लिए विशिष्ट हैं और अपना अलग अस्तित्त्व रखते हैं। हरियाणा अंचल भी अपनी भाषा, लोक संगीत, लोक नृत्य, लोक गाथाएं, लोक नाट्यों, मेलों, उत्सवों इत्यादि से सभी राज्यों में अपनी पृथक पहचान बनाए हुए है। पंजाब विभाजन के पश्चात् सत्तर तथा अस्सी के दशकों से हरियाणा की संस्कृति में संवर्धन तथा विकास में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। परिणामस्वरूप हरियाणा प्रान्त भारत के सांस्कृतिक मानचित्र पर गौरवमयी उपलब्धि के साथ उभरा। परन्तु वर्तमान में 75 प्रतिशत गांवों में निवास करने वाले हरियाणवी भी अपनी लोक संस्कृति को संकुचित होते देख रहे हैं। संगोष्ठी के मूल विषय पर चर्चा से पूर्व इस प्रश्न का निरीक्षण करना आवश्यक है।

संस्कृति आधिपत्य के विचारक Antonio Gramsci (1891-1957) का मानना है कि किसी भी संस्कृति को जिन्दा रखने में दो मुख्य घटक होते हैं – (1) Traditional (पारम्परिक) (2) Organic (उत्पाद बनाने वाले)। पारम्परिक अर्थात् ऐसे बुद्धिजीवी जो अपनी संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए राजकोष से नियमित भत्ता पाकर स्कूल, महाविद्यालय या किसी सांस्कृतिक संस्था में अध्यापक, प्राध्यापक या व्यवस्थक के रूप में कार्य करते हैं। संस्कृति के प्रचार–प्रसार को नियंत्रण करने वाली सांस्कृतिक समीतियां, सांस्कृतिक विभाग, हरियाणा सरकार, म्यूजियम, मीडिया तथा विज्ञापन एजेंसियां इत्यादि इसी श्रेणी से सम्बद्ध हैं। उत्पादक

अर्थात् गायक, वादक, सांग कलाकार इत्यादि संस्कृति को गढ़ने वाले वे लोग हैं जो समाज के निम्न वर्ग से सम्बन्धित होते हैं और उनकी आय का कोई नियमित स्त्रोत नहीं होता। पारम्परिक बुद्धिजीवी तथा उत्पादक कलाकारों के सामंजस्य से तीन–चार दशकों पूर्व हरियाणा की संस्कृति का बहुत विकास हुआ। शीर्ष स्तर पर हरियाणा सरकार के संस्कृति से सम्बद्ध विभाग, प्रान्त के अनेक विश्वविद्यालय तथा अन्य संस्थानों ने युवा महोत्सवों में तथा शैक्षिक पाठ्यक्रमों में हरियाणा की संस्कृति को सम्मिलित कर निरन्तर रचनात्मक प्रयास किए। दूसरी ओर प्रबुद्ध तथा गैर–प्रबुद्ध कलाकारों को राजकीय तथा निजी प्रायोजित कार्यक्रमों द्वारा लोगों से भरपूर धन एवं स्नेह की प्राप्ति होती थी।

कालचक्र जब करवट लेता है तब बहुत कुछ बदल जाता है। Antonio Gramsci ने कभी सोचा भी न होगा कि पारम्परिक बुद्धिजीवी तथा कलाकार का सामंजस्य समीकरण इतना बिगड़ जाएगा और तीसरा घटक ग्राहक (श्रोता या दर्शक), जो कभी मूक रहता था, शक्तिशाली और गतिशील होकर सब पर भारी पड़ेगा। श्रोता को आज मनोरंजन के अनेक माध्यम उपलब्ध हैं जैसे रेडियो, टी.वी., इन्टरनेट, मोबाईल तथा संग्रहित माध्यम। परिणामस्वरूप अनेक पीढ़ियों का वारिस स्थानीय कलाकार साधन तथा उचित प्रश्रय के अभाव में गुमनामी की ज़िन्दगी जीने के लिए विवश है। ग्राहक (श्रोता) के प्रवेश से नियंत्रकों तथा कलाकारों के सम्बन्ध में जो असंतुलन आया है, उनके कारण हैं – भूकम्पीय स्तर पर हो रहे तकनीकी, उदारीकरण, निजीकरण तथा भूमंडलीकरण जैसे परिवर्तन। यह हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को तेज़ी से प्रभावित कर रहे हैं। तकनीक को अपनाने से व्यक्ति श्रम–विमुख तथा चिंतन–विमुख हुआ है, निजीकरण ने पूंजीवाद को बढ़ावा दिया है और उदारीकरण एवं भूमंडलीकरण ने अप–संस्कृति को आयात किया है। फलस्वरूप हमारे प्रतिष्ठित एवं स्थापित सांस्कृतिक मूल्यों को ठेस पहुंच रही है।

कालान्तर में विज्ञान से आसक्त व्यक्ति अपनी प्राचीन संस्कृति को दकियानूसी, तर्क–विरोधी तथा त्याज्य मानने लगा है। व्यक्तिवाद हावी होने से अलगाववाद, अशांति, हिंसा तथा अवसाद जन्म ले रहे हैं। ऐसी विकट परिस्थितियों में आशा की किरण देखने वाले सांस्कृतिक विशेषज्ञ श्री

गणेश देवी ने 16 दिसम्बर, 2019 की आऊटलुक पत्रिका में पृष्ठ–25 पर प्रकाशित अपने लेख में कहा कि, ''स्मृति किसी समाज की गैर–व्यक्ति निष्ठ और सामूहिक स्मृति है और कुछ खास चरणों में भले वह खो जाए मगर वह अपने वास्तविक रूप में कायम रहती है।'' ऐसी स्मृतियों को ताज़ा करने के उद्देश्य से ही ''हरियाणवी लोक संगीत का राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में योगदान'' विषय पर संगोष्ठी करवाई गई। संगोष्ठी का उद्देश्य श्री गुरू नानक देव जी के इन शब्दों (श्री गुरू ग्रन्थ साहिब, अंग–767) में निहित है, ''मन परदेसी जे थीये, सब देस पराया''।। इसके साहित्यिक अर्थ हैं कि यदि आपका मन अपने देश, प्रान्त जहां से आप सम्बन्ध रखते हैं, उसके लाभ–हानि में नहीं है, वह आपके लिए बेगाना है। अपनी मात्रभूमि, अपनी संस्कृति तथा अपने प्रदेश के लोगों से प्रेम करना वास्तव में सच्ची राष्ट्रीयता है। हरियाणवी लोक संगीत ने यहां की संस्कृति का प्रचार–प्रसार करने एवं राष्ट्र निर्माण में किस प्रकार की भूमिका निभाई है तथा वर्तमान में इसकी क्या स्थिति है, इस संगोष्ठी में निम्नलिखित उपविषयों द्वारा प्रस्तावित किए गए थे :–

- हरियाणवी जनजीवन में लोक संगीत के विभिन्न आयाम।
- हरियाणावी लोक–गीतों व लोक–नाट्यों द्वारा राष्ट्र चेतना।
- हरियाणावी लोक–संगीत के मुख्य सांगीतिक तत्त्व।
- हरियाणवी लोक–वाद्य।
- युवा महोत्सवों तथा मेलों द्वारा लोक–संगीत का प्रचार।
- हरियाणवी लोक–गीतों के गायकों व वादकों का योगदान।
- चलचित्र, टी.वी. तथा इन्टरनेट द्वारा लोक–संगीत का आलोचनात्मक विश्लेषण।
- हरियाणवी लोक–गीतों में नीतिगत मूल्यों का संरक्षण।
- लोक–नाट्य परम्परा सांग।
- हरियाणवी लोक–नृत्यों में संगीत।

जिन उपविषयों पर हमें शोधपत्र प्राप्त हुए उनमें लोक–नाट्य परम्परा सांग, हरियाणवी लोक–वाद्य , लोक–संगीत, लोक–नृत्य,

लोक–गायक द्वारा राष्ट्रीय चेतना तथा हरियाणवी लोक–संगीत में नारी चेतना प्रमुख थे। हरियाणवी संगीत के कुछ पक्षों पर हमें अपेक्षित पत्र नहीं मिल पाए जैसे चलचित्र, टी.वी., इन्टरनेट तथा मीडिया की भूमिका, हरियाणवी संगीत में सांगीतिक तत्त्व, युवा महोत्सवों तथा मेलों द्वारा लोक–संगीत का प्रचार तथा हरियाणवी लोक–गीतों में नीतिगत मूल्यों का संरक्षण। एक दिवसीय अन्तःविषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में हरियाणवी लोक–संगीत की दीर्घकालीन परम्परा के सभी पक्षों पर पूर्णतया केन्द्रित रहना मुमकिन भी न था तथापि हरियाणवी संस्कृति से संबद्ध सभी बुद्धिजीवियों को एक मंच पर एकत्रित कर लोक–संगीत के बिखरते मोतियों को समेटने का यह एक अधनासा प्रयास था। मुझे आशा है कि यह पुस्तक हरियाणवी संगीत पर उपलब्ध न होने वाली रिक्तिका को कुछ हद तक अवश्य भरेगी और भविष्य में इस प्रकार की संगोष्ठियों के क्रम से साहित्य सृजन के लिए मील का पत्थर साबित होगी।

0-0-0-0-0-0-0